सोढी री मा रा नैणां में आणद रा नै मोह रा आसू छलछलायग्या। "बेटी पराई व्हेगी, परी जावेला" ई विचार सू मा रो काळजो हालगियो। तीजो फेरो फिररिया, केसर टापा पटकै नै माथो धूणनै हीसी, पाबूजी रा कान वठी ने लाग्या, डामो ऊठनै गियो। घोडी रस्सी तुडाय दीधी, टापा पटकगी, आख्या में आसू भर राख्या, माथो झफोडरी। ये काई अपसुगण? घोड़ी ने थापी दे जतरै तो देखै, देवळ चारणी, केस खिड़ायोडा रोवती जायरी नै आय हाको कीधो "म्हारी गाया लेग्या।" डामो पूछै पूछै जतरै तो देवळ, पाबूजी फेरा खाता जठै जाय पूगी, केस ताणती रोवा लागी,"पाबूजी, था तो अठै सोढी रा हथळेवा में रीझ्यां बैठया हो वठीनै म्हारी गाया खीची ताण नै लेग्या।"

सुणताई पाबूजी जागो झटकाय उठ्या, हथळेवो बध्यो लगो जीने खोलता नजर आया। खळभळाटो मचग्यो। एक पल पै'ला अगनी ने साखी दे पाबूजी री हाथ ने आपरै हाथ में झेल्यो हो वीने छोट ऊभा व्हेग्या। सोढी मूरती ज्यू बैठी री बैठी रैगी। सोढा आख्या फाड देखता रैग्या। पाबूजी केसर साम्हा चाल्या, सोढी ने चेतो आयो वा लाज सरम भूलगी, भूलगी वीरा पीयर रो सारो परवार बैठ्यो है, जाताथका पाबूजी रा वागा री चाळ पकड लीवी, आख्या में आसू भरग्या। कुमळायोडा फूल री नाई होट सूखग्या।

तीजोड़ा फेरा में जी पाबू किस विध चाल्या छोड़।
आधी तो कुंवारी जी म्हाने आधी ब्यायोड़ी छोड़ दी॥

पाबूजी पल्लो छुडायो चान पण छुडा नी आयो। एक पल सोढी

पै'ला विजोगणी व्ही सोढी, आया फेरा में सू ऊठ्या भुरजाळा पाबू रो गैलो रोकनै ऊभी रैगी। सारो परवार सएणाटा में आयो चुप ऊभो। वाजता ढोल रुकग्या। मन्तर जोसी रा मूंडा में अधूरा रैग्या। वेदी री पावन अगनी बुझगी। सूरजमल सोढा रो मूंडो न्याइ पडग्यो। सोढी री कांचळी आंसुड़ा सूं आली व्हेगी। धाळिया डसूका भरवा लागी।

पाबूजी री नजर सोढी साम्ही, पग देवळ आड़ी नै।

थारे केसर टापा मारैनै हींस री। देवळ ऊभी माथा रा केस खेंचरी। पाबूजी उठी नै, करुणा करती सोढी साम्हा झाकै तो काळजो फटनै रैजावै, वठी नै चारणी देवी रो रौद्ररूप देखनै रोस सूं वारो रगत उफळवा लागै।

"सोढी, ये आखड़ा पूछलो, रोयनै सीख मत दो, एक रजपूताणी, रजपूत ने सीख दे ज्यूं म्हनै हसनै विदा करो। थारा आखड़ा में म्हू अटक जावूंला तो जुग में म्हारी मूंछा नीची व्हेजावेला, लोग कै'वेला पाबू सामरिया में सीजा करै, दियोड़ा वचन भूलग्यो, या कायर री अन्त्री वाजेला। था भुरजाळा पाबू रो हाथ पकड़ियो है, म्हनै म्हारा प्रण पूरा करवा दो, केसर पै काठी माडवा दो, देवळ री गाया पूठी घेर लावा दो। सोढी, राजी व्हे म्हाने सीख दो।"

सोढी, परणेत छापल सू प्याल पूंछ लीना, होठा पै माडाणी हंसी लीयाई, काळजा पै भाटो मेलनै वा रजपूताणी ज्यूं बोली "पधारो।" होठा पै हंसी ही, पण नैणा में दरद रो दरियाव उफळ रैयो। जीभ "जावो" कैयरी ही, पण हियो फाटरियो,

"चादा, डामा, घोड़ा चढ़ो, देवळ देवी री गाया री वा'र चालो।"

पाबूजी रो भालो उठ्यो, सोढा री अस्त्रिया पाबू रा इं रूप ने एक टक देखती रैगी "अस्यो वींद सोढा री पोळ नीं तो कदे ही आयो नी कदे ही आवे, लावो कागज लावो यारो चितर उतारला, अस्यो रूप फेरु देखण ने नी मिलेला।"

पाबूजी सोढ़ा सू मुजरा जुहार करिया,

"जीवांगा तो आवांगा म्हे ओजू सुरंगे सासरे"

केसर री पूठ पै थापी दे सवार व्हीया। सोढी रा गठजोड़ा री गाठ खोल, वचना री गाठ में बंध, गाया छुडावा चाल्या। साळा साळिया रा प्याला री मनवारां छोड़ तरवारां री मनवारा लेवा चाल्या, रगभीनो पाबू रोसभीनो व्हेग्यो। जीं केसरिया वागा सूं राजकवरी ने परणी वीज वागा सू सत्रु री कुवारी सेना ने परणवा चाल्या। कवरी ने चंवरी में छोड मवरी री पूठ पै चढ्या।

प्रथम नेह भीनो महा क्रोध भीनो पछै
लाभ चमरी समर झोक लागै,
रायकवरी वरी जैण घागै रसिक
वरी घड कवारी तैण वागै।

चोंईस वरसां रा पाबू सोढी री सुखसेज मांथै नी, रण सेज में पौढ गिया। गोगाजी ने खबर लागी, खींचिया रा हाथ नूं पाबूजी वारा ख्टा मांई भूराजी खेत रैग्या। चांदो अर डामो ही धणी रे लारै कट मरया।

टोडियो भाग्यो जावै, मूंढा सूं झाग पड़ रिया । टोरडियो दौड़े जो राती भूरी रेत रो मतूळियो उड़तो जावे, रेत रा रंग जिसो ऊंट रो रंग, रंग में रंग मिलग्यो । राईके ऊंट ने अस्यो दबायो के वींने बोझा उडता लागै, पग नीचली धरती भागती दीखै ।

चूड़ाजी री गैलीराणी गोखड़ा में बैठी देखै तो ओठी ऊंट भगाया आय रियो । गैलीराणी जाणगी व्हे न व्हे आपणै ही घरे कोई करड़ै काम आयो है ।

अतराक में तो आय चूडाजी री पोळ आगै कुरिया ने जेकायो । गैलीराणी डावड़ी ने कयो, "हीडागर ! ओठी ने पूछ कठा सूं आयो, कांई काम आयो ।"

हीडागर झट नीचे ऊतरी ।

"ओठी ! मन री वात कै ! कठा सूं आयो ? काम काई है बता ।
राईको बोल्यो "मन री वाता दासियां सूं थोडी कहीजै, राणी ने नीचै भेजो ।"

आडो पडदो तणाय गैलीराणी नीचै ऊतरी ।

"ओठी ! बोलो, कांई समाचार लाया ? कठा सूं आया ?"

"राणीजी ! गोगाजी रो भेज्योड़ो आयो हूं । राठोड़ां रा नै [illegible] रा झगड़ा रा समाचार लायो हूं ।"

"ओठी ! कै कै झट कै, दोई दळा रा समाचार सुणा । कुण रान्या, कुण जीत्या ?

"थारा अर म्हारा सूरज चाद छिपग्या। दिनड़ो छिपग्यो अंधारी रात आयगी। करमां में वेमाता आक लिख्या जो टळै नीं। म्हू सती व्हैयरी हू। था ही सती व्हेता व्हो तो झट आयजावो। नीं तो आप रे घरै बैठया माळा फेरजो।"

सूरज ऊगता ऊगता राईको अमरकोट पूग्यो।

फूलमदे सोढी ऊट दौड़तो लगो आवतो देख्यो। सोढी रो काळजो धूजग्यो।

ओठी तो आवता ही सोढां री पोळ उतरयो। जुहार मुजरा कीया।

"आओ, पगरखी खोलो। जाजम पै बैठो। कठा सूं आय रिया हो?

"कोलू सूं आय रियो हु, सोढीजी रे कने आयो हू।"

"टळां रा समाचार?

"जब तो पाबूजी जीत्या, धाड़े खीची जीत्या"

सोढां रो सगळो साथ फीको पड़ग्यो। माथा पै मोड़ा चाळ ओढ लीधी। दासी नै बुलाय नै कह्यो, "ओठी ने फूलमदे कने लेजा।"

ओठी जायनै देखे, सायण्या रे बीचै सोढी यूं बैठी जाणै फूलां री डार रे बीचै फूल खन्ची बैठी व्हे। गोळो भोळो मूंडो, हाथा रे फाल्गु डोल्या चंप्योड़ा, फेरां में पैरयोड़ी पोशाक पेर राखी, हाथां पगां रे मियान री मेंदी मड्योड़ी।

लाड कर घी घाल घाल चूरयो जिमावोला ? औरा रा घर तीजणिया सूं रूपाळा लागैला, मा, थारा आंगण में कुण लैरियो ओढ फिरैला ?

सोढी ने यूं रोती देखी तो सूरजमल सोढ़ा री करडी छाती मेंण री नाई पिघळगी। बेटी ने छाती रे लगाय डसूका भरवा लाग्या।

सोढी रोय रोय कैवा लागी, "बाबाजी, म्हू तो चाली यो थारो टायचो म्हारे करम में नी लिख्यो। ये ढोलिया, निंवार अठै ही धरया रैगिया। म्हने था घणा लाड लडाया, रूठ जाती तो हाथ सूं गिरास दे दे जिमाता, गोद में लेनै खेलावता। थारी गोद री चिडी तो उड री है। था हाथ सूं म्हने सत रो नारेळ दो। म्हू जावू।"

बाप आखरी बगत माथा पै हाथ मेल्यो, नारेळ झेलायो।

सोढी बाथ घाल माई सूं मिली।

भोजाई सूं मिली, "आखरी मिलणा है अबै ईं जनम में तो मिलाला नी।"

एक एक साथण सू भुवा पलार पलार मिली, "अबकै बिछडया फेर नी मिलाला। था म्हारे आगली रमवा ने मत आवजो, नी तो म्हारी मां याद करकर कमी रोवैला।" सगळा सू मिल राम राम कर सोढी रथ पै चढ़ी।

टायचा में देवा ने रथ मगायो जींरी लाल झूल वैलिया ऊपर सूं उतार धोळी झूल घाली। बळदा री लाल रग री सीगोटी परी उतारी, गळा रा घूघरा खोल लीया।

सती व्हेवा ने त्यार व्हेगिया। देगरणी जेठाणी, नखचख सूं सिणगार कर लीला घोड़ा पे सवार व्ही।

आगे आगे ढोल बाजता जाय रिया। पाछे बसती रा लोगां रा "हर हर" रा जैकारा सूं गगन गूंज गियो। घोड़ा रोक सतिया नीचे ऊतरी। रसम डोर लगाय कुआ सूं पाणी खैंच्यो। कपड़ा पैरिया सूधा ही खळखळ पाणी कुदने सतिया सनान कीधो। सतिया माथा पे गंगाजळ री झारी रा मूंडा खोल दीधा। जो धन माल हो सगळो बामणा ने पुन कर दीधो। चारण पाबूजी री वीरता रो बखाण कीधो, जाने धोबा भर भर सोना रो गहणो देय दीधो।

चन्नण ने नारेळा री चिरयोड़ी चिता में दोई सतिया बैठगी।

—०—

दस वरसा मूं श्रो देखतो आयो, वी माग ई ज आखा तीज ने दूजा रे लारे कर देला।"

सोढा जवान री आंख्या मे खून उतर आयो। आज तक कदे ही असी व्ही है माग रे वास्ते तो माथा कट जावै, म्हू जीवतो फिरू अर म्हारी माग ने दूजो परणै, हरगिज नी, हरगिज नीं।

"बोहरा काका, म्हारी लाज थारे हाथा है।"

"लाज तो म्हे घणी ही राखी है। थू बता कस्या खेता पै पनरासो गिण दू? अडाणी काटे राखेला?

"म्हारे कनै है ही काई? रजपूत री आबरू एक तरवार रो खापो म्हारे कने बच्यो है।"

"तो भाई, की दूजा बोहरा रो बारणो देख।"

सोढो तड़फ्यो। देख काका, थे म्हारा घर री छळी छळी, म्हारा नैनपण में झूठा सांचा खत मांड मांड लेय लीधी। म्हारा घर में ठीकरो तक नीं छोड्यो। म्हे थनै सारो दीयो, अर जो ही मागतो वो देवण ने त्यार हू। पण ई वगत म्हारी, म्हारा वडारा री लाज राखलै। वींरी मांग दूजा रे लारे परी जावै सो जीवतो ही मरया बराबर है। ई तरवार, जगदम्बा ने माथै मेल सोगन खावू थारो पीलो पीनो दूध सू धोयनै चुकावूं। थारे दाय आवै जतरो ब्याज मांडलै। ई वेळा म्हने गिनिया गिण दे।

"रजपूत रो जायो व्हे तो ये अन्या बोल मत कढ़े। म्हूं खत पै जो मांड दू वी पै थूं दसगत कर देवैला के?

चट्टान ज्यूं आय ऊभो व्हेग्यो, वींरा हाथ कापग्या । लोटा सूं पड़ती पाणी री धार जमी पै पड़ वैयगी । रात पड़ी, सोणै री वेळा आई । वासरा सूं आयोड़ा ढोल्या पै सूता । झट म्यान सूं तरवार काढ़ दोय जणा रे बीच में मेल, मूंढो फेर सोयग्यो ।

रजपूताणी सहमगी । "यूं क्यूं, म्हारा सूं काई नाराज है ?"

एक, दो, तीन, दस पनरा राता बीतगी । या हीज तरवार काळी नागण ज्यूं रोज दोवा रे बीचै । दिन में बोलै, बात करै जद तो जाणै जोदा रे मूंडा सूं अमरत झरै, आख्या सूं नेह टपकै पण रात पड़ता ही वीज मूंढा सूं एक बोल नी निकळै वे हीज आख्यां साम्ही तक नी झाकै । रात मर अतरा नजीक रैवता थका ही घणां दूरा । दिन में घणा दूरा रैवता थका ही घणा नजीक ।

रजपूताणी बारीकी सूं जोदा रो ढग देखै गेराई सूं सोचै । वीं सूं रियो नीं गियो । ज्यूं ही तरवार काढ ढोल्या पै सोवा लाग्यो, झुक पग पकड़ लीधा,

"म्हारो काई दोस है ? म्हारा पै नाराज क्यूं ? गलती कीधी तो म्हारा मा बाप जो थांने रिपिया सारु फोटा पाड्या ।" टळ टळ करता आंसू, जोदा रे पगा पै जार पड़ता ।

"इण कै म्हूं थारा पै नाराज हूं । थूं म्हारी, म्हारा घर री धणियाणी है ।' आपरा हाथ सूं वांरा हाथा ने पगां सूं दूर करतो जोदो बोल्यो ।

पसीनो पूछतो लगो सवार नीचे उतर मुजरो कर घोड़ा री पूठ पै पाछो जाय बैठयो। कुण सोच सकै के भाला रा एक हाथ मे एकल सूर ने धूळ भेळो करवा वाळी लुगाई है।

राणाजी राजी व्हे हुकम दीयो "ये वीर हो, आज सूं था दोई भाई म्हारा ढोल्या रा पै'रा री चाकरी दो।"

खम्मा अन्नदाता कर चाकरी भेळी।

सावण रो मी'नो, खळ खळ करता खाळ बैय ग्या। तळाव चादर टाक ग्या। डेडरा हाका कर ग्या। एक तो अधारी पख, ऊपरे चौमासा री काळी रात, काळा काळा बादळा छाय ग्या। बीजा सळाका लेवै तो आंखी के आंख्या मिच जावै, खोल्या खुलै नी। इन्दर गाजै तो अन्धा के जाणै परथी ने ही पीस दूं। अधारी भयावणी रात हाथ नूं हाथ नी सूझे। राणाजी तो पोढ्या, दोई रजपूत पै'रो देवै।

हाथ में नागी तरवार लेय गाजी। बीजळी चमकै जो वांरी नागी तरवार री चमक में झळमळ करै। आधी रात री बात, राणाजी ने तो नींद आवगी पण राणी री आंख्या में नींद नी। सूनी रात री उदन्त रा रूप रा अदभुत मेळ ने देख री।

दोई रजपूत तरवार पाड्या मे लार बारणा आगै ऊभा।

उजास में बीजळी चमकी राजपूताणी ने याद आई काळा देव माथे चमक रई ही। [illegible] याद रै लारे री दाई मेळ बाता याद आगी। [illegible] [illegible] री मरदानो भेस [illegible] [illegible] मे आधी रात रा पै'रा देखी ह।

"आप मानो भले ही मत मानो। या में एक लुगाई है अर कोई आफत में है।"

"या रो पतो क्स्या लगावा?"

"ई री परीक्षा म्हूं करू। आप मे'ला में बिराज जावो, जाळी में नू झांकता रीजो, वा दोई भाइया ने बुलावू।"

चूल्हा पै दूध चढाय दीवो, डागटी ने इसारो कीयो, वा बारै निकळगी। दूध उफणतो देख्यो तो रजपूताणी हाको कर दीधो, "दूध उफणै दूध उफणै।" मोढो आग रे इसारो कै बतैरे तो राणीजी बारै निकळ पूछ्यो, 'बेटी, साच बता थू कुण है। म्हारा सू छिपा मती।' रजपूताणी आख्या आगै हाथ दे राणीजी री छाती में मूंडो घाल दीधो।

मोढै सारी बात सुणाई। राणाजी घणा राजी व्हीया।

"थारा करजा रा रिपिया ब्याज मूळा म्हूं साहूकार उबार रे साथै थारै गाम भेजूं। थां अठै रैवो गिरस्थी बसाओ।"

मोढै हाथ जोड्या "अन्नदाता री हुक्म माथा पै पण जठा ताई म्हू म्हारा हाथ सू रिण चुकाय नहीं पाऊ नीं व्हाकू ज्तरै हुक्म री तामील किया रैं। म्हाने सीख बगसावो।"

राणाजी करजा रा रिपिया साथ गिरस्थी बसावा री सगळो सामान दे वाने सीख दीधी।

आ पन्ना री बात रा जगत रो विचार ही न्यारो मांडो है।

"म्हारा बोल सच्चा जाणे, जै तुस्साम्ही पुत्तरी हूं तो घोड़ी ल्यादूं।"

बूढा बाप रे काना में जाणे अमरत बरस्यो।

"तो ला पजा दे।" हाथ लाम्बो पसारियो।

पिउसधी हाथ पै हाथ राख बचन दीधो। सन्तोख री सास रे सागे त्रिलोच रा प्राण उड़ग्या।

पिउसधी माथा रा केसा रो जटाजूट बाध्यो, माथे लपेटो बाध्यो। बाप रा घोड़ा पै जीण कस्यो। बाप रो तीर कबाण सभाळ्यो। त्रिलोच जवाना रे लारै सस्तर विद्या सीखै। रोज घोड़ो दौड़ावै। सारो दिन कबाण पै तीर चलावै, रात पड्या बिछावणा पै सूती २ सपना देखै तो ही पटागणा पै तीर फैंकवा रा। खावता, पीवता, उठता, बैठता तीर अर कबाण। ध्यान ध्यान सगळो तीर कबाण। वा भूलगी के वा एक मोळा बरसा री सुदरी है। वीने चेतो ही नीं रियो के भिनक्ख जाति रा अस्त्री अर पुरस दो भेद है। वा सोचती के वा कागडा त्रिलोच रो बेटो है, वींरो मन कैवतो, वा बेटो है, आत्मा कैवतो भगती वा बेटो है, दुनिया देखती अर जाणती के या कांगडा त्रिलोच रो बेटो है।

बाप री पोसाक पैरता, बाप रा ही सस्तर बान्ध्या, बाप रा घोड़ा पै सवार व्हे निकळती जद लोगां री आंख्यां वीं रा मूंडा पै एक पल तो अटक ही जाती। नित री कसरत सूं कसोड़ो सरीर, सस्तर री सिक्सा री चढ़ियोड़ो मूंडा ऊपरै तेज। देखवा वाळा देखता रै जाता। बूढ़ा रा मूंडा सूं निकळ जातो "कोई ज्वान है।" जवानां री नजर वीं रा मूंडा स्यूं ... सरीर माथै अटकती फरूं ने ऊपरी ... रै जाती ... पन

एक काम थांरो, एक काम म्हांरो। कै तो रुकनै पठाणा ने रोको, कै घोडया घेर आगै बढो। बोलो झट।" त्रिलोक जवान दाकल कीधी। घोडया घणी है, म्हा ले'र आगे बटा, थां याने रोको।"

"घणी आछी बात। याने एक पग आगे नी देवा दूं, थां धीरै धीरै बढो, पाछलो सोच ही मत करजो।"

भीमजी अर बारा तीनसो ही साथी घोडया घेर आगै बढ्या। पिडनजी कबाण पै तीर चढाय, मारग में ऊभी व्हेगी। पठाणा रो झुण्ड, दांता सूं होट चाबतो, झाळ में भरयो, घोडा दपटातो आयो।

"ठैर जावो, बटै रा बटै, आगे पग दीधो तो मारया जावोला। जीगी न्यारसो पावडा तीर फेंकवा री हिम्मत व्हे जो आगै आवजो"

लारै रो लारै तणण करतो तीर गियो। हजार पावडा पै ऊभा एक पठाण री छाती में जाय गड्यो। पठाणा रा आगे बढता घोडा धीमा पडग्या। पठाण ताण ताण'र तीर फेंकै जो कोगे ही तीनसो पावडा पै पडै नी कोगे ही नाढा तीनसो पावडा पै, टूट जो एक दो जणा रो चालसो पावटा तक पूग्यो। पिडनजी पावडा पै पग दे ऊभी होय'र तीर फेंके जो हजार पावडा दूर ऊभा पठाणा रा [illegible] में जाय [illegible] नै बींदे। छाती वाळा दस तीन जणा घोड़ा मेंडाता आगै बढणो चाया पण गेला रा गेला में [illegible] पिडनजी रा तीर [illegible] वण घोडा ने ठिकाणे गमा दीधा। एक रो ही तीर पिडनजी तक पूग्यो ना।

पठाण दीठा पर पाछा फिरया, पिडनजी पाछे फिर फिर देखती [illegible], घोडा ने [illegible] [illegible] चाली।

जरूर आटो भील !! दूजो कोई नी। आटै भील देख्यो बीजळी रा पळाका में, पिडतधी ने अर भीमजी ने एक ढोल्या पै सूता थका। नस नस में वाम्दी लागगी। "आज दोवा रा ही एक झटका में टुकड़ा करूं। घणा दिन देख्या घात घालता ने, नीठ आज मोको मिल्यो।" धीरे धीरे पग बजाया बिना वो भींत सूं नीचे उतरयो।

पीडनधी ढोल्या सूं धीरे सी नीचे उतरी सिराणा सूं नागी तरवार उठाय हाथ में तोल्या ऊभी। सारो रोस गरल्यो तरवार ने पूरी ऊंची हाथ में उठाय राखी। आटो भील ज्यूं ही ढोल्या कनै आयो अर नाची के दोवा ने एक साथै ही बाढूं, जठा पै'ली तो पिडनधी री तरवार आटा भील पै पड़ी जो माथो टूट परा'या जानी गुड़्यो, धड़ बठै हीज ढोल्या कनै पड़्यो। लोया सूं भागणो आलो वैगो।

तरवार ने सिराणै मेल पिडनधी सोयगी।

पा[illegible]जी पो'र रा भीमजी रो नसो उतरयो, नीचे उतरया तो लोया में पग पड़्यो, चप चप करता पग भरया, जाण्यो परनाळा रो पाणी भरयो दीखै, बोल्या, "रात अधारी चीन्दलो"

जद पिडनधी बोली, "आटो बीजरियो।
मैं पिडनधी झाटकियो, सो भीनो ऊबरियो"

[illegible] सुण [illegible] देख ने पिडनधी [illegible] चलाणी सिखाई, [illegible] हाथ [illegible]।

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] सुगळ [illegible]

जगडो ऊभो व्हीयो, "म्हे मारयो ।" नवाब मूंडो देखतो रैग्यो । ई दस बरस रा टाबर रा निस्तक पणा पै अचमो आयो ।

"क्यू ?" नवाब सवाल कीधो ।

"नाग गाय ने मार रियो जो वींने बचावा ने, दूजो बस्ती रे कनै आयग्यो ज्यू, मारतो नी तो मिनखा रो नुकसाण व्हेवा देतो ?"

नवाब चुप रैग्यो । माथा नूं लगाय एडी तक गौर सूं वींने देख्यो । लटका री डील, मूंडा रो तेवर, चेहरा री तेज, बोलणै री हिम्मत । भीमजी कानी देख्यो । भीमजी डील डौल मरद रा तो पाछा पण जगडा री तो बात ही और । नवाब सोच्यो, टाबर कै तो मा पै व्है कै बाप पै व्है । यो जरूर ई री मा पै है । ई री मा ने देखणी चाहीजै, कठीनै है ।

भीमजी नूं क्यो, "ई जगडा री खेत बताजो, जी खेत में यो नीपज्यो, वींने देखण री लालसा है । थां घरा जाओ पण जगडा री खेत बताणो री पडेला ।"

भीमजी ढीला ढीला घरै आया । पिडनथी पूछ्यो, "काई बात व्ही ? आतरा उदास क्यूं ?"

"उदास कांई है, कै तो मर दूंला कै [illegible] समाज पै कलंक लागेला । [illegible] कांई नी देखणी है । नवाब जगडै रो खेत देखण री जिद करै । [illegible] म्हारी लुगाई ने कीने बताऊ ? भीमजी उदास [illegible] डोल्या पै [illegible] ।

[illegible] दिन भीमजी ने [illegible] । [illegible] ने [illegible] रैग्यो, [illegible] देर [illegible] पुराणी [illegible],

जरूरी जाणो ही है। नवाब कड़ा सिरोपाव दे सीख दीधी।

पिछमधी घरे आई जतरे भीमजी ढोल्या पे पड़्या आळस मोट रिया हा। दूजे दिन तो नवाब रा सिपाही भीमजी ने आय ताकीद कीधी हीन जखड़ा रा खेत ने बताणे री। पिछमधी कडा सिरोपाव भीमजी रे हाथ में दीधा, ये नवाब रे मूढागे राख दीजो पछे वो खेत ने देखवा रो नाम नी लेवै। भीमजी ने देखता ही नवाब आख्या काढी।

"एकला एकला आया ? म्हें देखवा ने कयो वा चीज कठे है ?"

"वा तो नजर गुजार कद की ही व्हेगी।" भीमजी हसते हसते कयो।

नवाब लाल पड़्यो, "भीमजी ! तमीज सू बात करो।"

"तमीज ही सू तो कर रियो हू। ये कड़ा सिरोपाव म्हारे परणाने है जाने ओळख्यो। काले सिकारग्या आप सू मिल्यो कोनी हो के ?"

नवाब अचम्भा सू चाको फाड दीधो।

"वाह रे वाह निरागा ! थनी मा हीज अस्या पूत जणे।" गावट ल्यावनो, बूढो बोल्यो,

> भुंई परक्खो हे नरां, काई परक्खो बिंद ।
> भुंई बिन भला न नीपजे, कण, तृण, तुरी, नरिंद ॥

धरती (मां) ने देखो। बिना उत्तम धरती (मां) रे, तृण, घास घोड़ा अर नर आछा पैदा नी वे सकै।

—०—

डावड़ी ने कह्यो, "गरणा पै पड़दो नाख दे, थाने मायने बुलाय ला।"

बेटा री आंगळी पकड़, पड़दा रे लारै मायने ऊभी व्हेयगी। कामदार फोजदार, मुजरो कर पड़दा रे लारै ऊभा व्हेग्या। हाथ जोड़ी कर राणाजी रा हुकम रो कागद पड़दा में माजी ने भेळायो।

"औ ?" वाचतां ही माजी रा मूंडा सूं कोरा दो अक्खर ही निकळ्या। "अबे आप हुकम दो जो ही करां। ठाकरसा तो पूरा पांच बरस रा ही कोयनी व्हीया, चाकरी में लेर जावां तो किण तरै ले जावां।" माजी री नजर आंगळी पकड़ने ऊभा बेटा री काळी काळी भोळी भोळी आंख्यां सूं जाय टकराई। मा री ममता जाग गी। रूं रूं ऊभो व्हेग्यो, छाती में दूध उतरवा रो सो सरणाटो आयग्यो। लारै रे लारै "जो हाजर नीं व्हेला थांरी जागीर जब्त करली जासी" हुकम री ओळी बळबळता तीर री नाईं आंख्यां आगै चमकगी।

मन में एक साथै घणा ही विचार आयग्या। "जागीर जब्त व्हे जासी ? म्हारे बेटा बाप दादा रा नाम बाळणो व्हे जावैलो। वां री पांच भायां में कांई इज्जत रैला ? वां रे बाप नीं दिया पण म्हूं तो हूं। म्हारे जीवता जीव बेटा रो हक छूटै, धिक्कार है, म्हारा जीवन जमारा पै। म्हूं आंधी गोदली हूं कांई जो पन्दरां री भोम ने गमाय दूं। म्हारा धरम पै दाग नीं लागै ?"

थांरी आंख्यां रे आगे एक तस्वीर सी नाचगी जाणै थांरो जवान बेटो ऊभो है, घणा परणी बेरी में मारो मार रियो है, "ये सगाई में नीं पगारया सा

सूं लड़ता लड़ता मरस्या कै नीं ? म्हूं ही वारा हीज घराणा में आई हूं । म्हूं क्यूं नीं जावूं ?"

जमीत सजगी । नगारा पै कूच रो डको पड्यो । निसाण री फरियां खोल दीधी । पाखर घल्यो घोड़ो आय ऊभो व्हीयो । माथै टोप, जिरह बख्तर रा काळा लोह सूं ढक्या हाथ बेटा री कवळी कवळी बाहां ने पकड़ गोद में उठावा ने आगे व्ही । टाबर सहमग्यो । बोली तो मा सरीखी अर यो अलच भेस रो आदमी कुण । गाला रे होठ अड़ाता अड़ाता मां री पलकां आली व्हेगी, "बेटा, यो जंग थारे वास्तै, थारी इज्जत वास्तै ।"

एक ठंडी सांस रे साथै वारा होठ हाल्या ।

आगै आगै घोड़ा पै भालो मळकावतो फौज रो मांझी अर लारै लारै सारी जमीत उदैपुर आय हाजरी में नामों मंडायो, "कोसीथळ रा फलाणसिंघ चूंडावत मय जमीत रे हाजर ।"

हमलो व्हीयो । हरोल चूंडावतां री । हमलो करै तो पैं'ला हरोल वाळा ही आगै बढ़ै अर सत्रुवां रो हमलो झेलै तो ही हरोल पै ही जोर आवै । सिंधु राग गावण लाग्या । हरोल रे अधबीचै, चूंडावतां रा पाटवी रूड़ूजर नायजी ऊभा व्हे बोल्या, "मरदां ! दुसमणां पै घोड़ा ठेल दो । मर जावो परा पग पाछो नीं देणो । या हरोल नें रेवा री इज्जत, आपां पीढ़्यां सूं निभाता आया हां, आज ई आपणी जिम्मेदारी ने पूरी निभावणो, देस सारू मरणो अमर व्हेणो है । हां, खींचो लगामां ।"

एक हाथ सूं लगाम खींची दूजा हाथ में तरवार झलगी ।

" हैं ! राणाजी अचम्भा सूं कूदया । था लड़ाई में क्यूं आया ?"

"अन्दाता रो हुकम हो । जो लड़ाई में हाजर नी व्हे जींरी जागीर जब्त व्हे जावेला म्हारे टाबर छोटो है । हाजर नीं व्हेणो मालका री अर मेवाड़ री हरामखोरी व्हेती ।"

करुणा अर गुमान रा आंसू राणाजी रे आंख्या में छलक गिया । "धन्न है थूं !" राणाजी गदगद व्हेग्या । "यो मेवाड़ जग्नां सूं आन रास रियो जो था जसी देवियां रो परताप है । थां देवियां म्हारो अर मेवाड़ रो माथो ऊंचो कर राख्यो है । जठा तक असी मावा है जतरे आपां रो देस पराधीन कोनी व्हे ।"

ई वीरता री एवज में, थाने इनाम देणो चाव, बोलो था ही बताओ, जो थारी इच्छा व्हे ।"

माजी सोच म पड़ग्या, कांई मांगे कोई इच्छा व्हे तो मांगे ।

बारी म्हारां आगे बेटा री वे काळी काळी भोळी भोळी आंख्या फिरी । मा री ममता भटको खाय जागगी ।

"अन्दाता राजी हो अर मरजी होव है तो कोई असी चीज बगसावो जींसूं म्हारो बेटो पांचा में ऊंचो माथो करने बैठे ।"

"हजार री कलगी थांने बगसी जो थारो बेटो ही नी पीढ़्यां लग या कलगी पैर ऊंचो माथो कर थांरी वीरता ने याद कर्यां करेला ।"

—८—

"बेइज्जती री कोई हद व्हे ? बादसा लुगाया ने समझ काई राखी है ? वे कोई खेलवा रो खेलकणो है ? इज्जत ही लुगाई रो ससार में सब सू अमोलक धन व्हे । मरजाणो मजूर पण इज्जत रे साथे । बादसा रो यो जोर जुलम कदे ही मजूर नी ! नी !! नी !!!

चारुमती चीकरगी । माथा री नसा तणगी । छाती में सास नी मावे । बाप ने साफ ना केवाय दीवो "मरजावू पण बादसा ने नीं परणू ।"

अपमान सू दाझ्योड़ा, नीचो माथो घाल्या, कलक ने काळजा में दबाया, बाप गळगळा व्हे समझाण लाग्या, "बेटा, थू केवे जो नारी साची है पण बता और उपाय काई है जो म्हू करू ? आलमगीर री फोजा सू टक्कर लेण री आपा में तागत नी । वींरी एक पलटण आपणा सारा सैर ने उजाड़ देला । हजारा घर बरबाद व्हे जावेला । थारा जसी कती मैनड़ा मरू बेटया राडा व्हे जावेला अर वा पे जो सिपाही जुलम करला वो तो सोचणी नी आवे ।"

हमेसा अदब सू झुकी रेती वे आख्या आज पूरा जोर सू तणगी, हाथ जोड़ नरमी सू बात करवा वाळी चारुमती, छाती ताण मरदी करनी केगी ।

"जुलम, बेइज्जती झेलवा सू तो बरबाद व्हे जाणो आछो । औरत री इज्जत सारू था नी मर सको तो मत मरो अर जीवते जीव कदे ही नी मानू ।" थां जतरा जणा हाथा में तरवार लीधा फिर रिया हो, क्यू नी एक झटको म्हारे माथा रे मारो ! सारो झगड़ो ही खतम व्हे जावे ।"

हरणी जसी आख्या में आसू भरया माथो आगो कीधो ।

मडूनर रा गढ में राग रंग रा फुंवारा छूट रिया। नरगाड़ में बधावा बनड़ा गाईज रिया। लुगायां रा झूमका रा झूमका अटीने वटीने गोटा किनारी री ओढणियां ओळ्यां फिर रिया। नीचे बैठी ढोलणियां माड में दूहा देय री। ऊपर मे'ल में मखमल री गादी पै मसनद रो सहारो लीधा रावत रतनसिंहजी बैठ्या, कने ही नवी परणी बीनणी हाडीजी, लाल परणेतू पोसाक अर लाल हाथीदांत रो चूड़ो पैर्‍या बैठ्या। हींगळू री पोट सरीखा लाल होठां री झांई, वीं रूप री रागी रा गालां री लाली ने और ही गैरी कर री। अतर रा दीवा रा झळमळ करता चानणा में, कंचन सरीसो रंग दूणो दूणो दमक दमक जावतो। रावतजी एक टक वार सामा जोवरिया, जाणे मतवाळो आप झोला लेवै। वारी तिरछी चालती एक ही नजर में आखो रूप पी जावा ने आगती होर री। वे हाडीजी सामा झांक्या, वीं नजर रो अरथ समझनै लाजी लाजी हुई री पलक सनी आख्यां लाज सूं नीची होगी, झीणी झीणी पसीना री बूंदां आयगी। रावतजी रा लुभाया नैणा रो नशो चोगणो होग्यो। हुकम री वाट में हाथ जोड़्या ऊभी दासी चनणाळा सूं बारै निसरगी। बारै बैठी दासयां रमाळी उगेरी।

काळा कसुंबा कजळ भरीना भाथा ने हाथ में दो नैणा रा प्याला सूं सागे रस ऊभाता रावतजी बोल्या, "हाडीजी, थे म्हने मिळग्या, तिलोक री सम्पत मिलगी। नौ निधि मिलगी। अबै रहे नी चाव म्हने।

पहलां देख ने रानीजी रा होठ हाल्या पण बोल निकल्या नीं। नैणां नीचा होगा मन ही मन आणन्द रा सागर में तिरवा लाग्या।

निकळ्या।

हाडीजी समझी, "म्हारो मोह थाने जावा नी देवै।"

नैणां री कोरां में पाणी भरग्यो। मन तो कह्यो हाथ पकड़ अठै ही राख लूं, पण आतमा अतस सूं धक्को दीवो, रजपूत अर जुद्ध सूं मूंडो फेरे? धिक्कार!

हाडीजी पूछ्यो, "कांई फरमा रिया हो?"

"सांच कैय रियो हूं। थाने छोडणी नीं आवै।"

हाडीजी रो दरप जाग्यो।

"थे मरद आप रा मूंडा सूं सुण री हूं? आज धणिया ने, जनम भोम ने आप री जरूरत है।"

"जनम भोम रो म्हूं एकलो बेटो नीं और घणां ही है।"

"आप चूंडाजी रा वंसज अर या कायरता? चूंडावता री बादरी री बातां घणी सुणी। या हीज है नीं आप लोगां री बादरी? देख लीवी। कुळ री मरजादा रो ध्यान है के नीं! आप री चारी पीढ्यां रणभूमि में खपी अर आप नट रिया हो। तवारीख में कांईं नाम मंडैला?

"तवारीख अर मरजादा री बातां थें म्हने कांईं सुणावो हाडीजी, म्हूं समझूं। कायर कोनी हूं, म्हारी बादरी री बातां सुणनी व्हे तो म्हारा दुसमणां ने पूछो। पण आज म्हारो धरम करम, मान मरजादा सब थें हो। सुरग नरक री चिन्ता नीं। म्हने चिन्ता है थारी, फेरी थारी।"

लीधी। ऊपर झांक्या, परखोतू पोशाक में जोरा हथलेवा री मेंदी रो रंग ही नी फीको पड़यो, वे हाड़ीजी झरोखा री जाळी में बीजळी ज्यूं चमकता दीख्या। घोड़ो रुकग्यो। हजूरी ने हेलो पाड़यो, "जा हाड़ीजी ने अरज कर कोई सैनाणी म्हारे खातर लावे।"

रावतजी री आख्यां गोखड़ा री जाळी सूं आगे नीं डिगे।

हाड़ीजी देख्यो, "यो मोह! ये रण जाय काई पने फैल्या? पीळ्या रा नाम रे काळो लागवा रा दिन है। उठी ने तो कायर पति रा उमोगा, म्हारी नायण्यां म्हने सुणावैला, वठी ने चूड़ावता रा ऊजळा इतिहास पै पैं'ली दाग यो कायरता रो दाग लागैला। ई सगळा रो कारण म्हूं। म्हारो मोह ही तो सगळा अनरथ री जड़ है।" वाने याद आवग्या वे हीज जोधपुर वाळा भूवा, हाड़ीराणी जो आप रा हाथां सूं पेट चीर औरंगजेब री फौज रे लारे युद्ध कर मरग्या। "म्हूं ही तो वीं खानदान में जनम लीयो है।" इतराक में खावड़ी आय हाथ जोड़ता बोली, "अन्नदाता आप री सैनाणी मगावे, लारे तो जावा ने।"

"हां दूं, थोड़ी या तरवार झेलाजे।"

तरवार म्यान सूं काढता बोल्या, "अन्नदाता ने अरज कर दीजे, या सैनाणी तो ले पधारो जी में आपरो जीव है या आप सूं पैं'ला जाय री है। अबै आप पाछा फर मत दीजो।"

या कैवतां ही हाड़ीजी तो तरवार ने हाथ में काढी पकड़ [illegible] नाड़ पै जोर रो झटको मारयो। [illegible] देखतां [illegible] माथो धम्म देती को धरती पै जाय पड़यो। [illegible] धरती पै [illegible] पड़यो है।

देखां, बाता ही बाता में पकड़ लायौ रो चमत्कार।"

अणतराय, परधान सामा दियो, "कयो जीने करले वो मिनख व्हे।"

"हाजर, सीख बगसाओ।"

> वाळद भरू मजीठ की, कोडी न देऊं डांण।
> लावूं सरवरिया कुआट ने, तो म्हैं साह सुजाण॥

सुजाण साह मुजरो कर विदा व्हीयो।

"ऊगा भाणेज व्हे तो था जस्यो। अबाजी वगत में आडा आवणवा योग व्हे। या कयो जो कर बतायो।"

वादळा सूं वातां करता गिरनार पहाड़ रे गढ़ में राजा खेंगार, आपरे भाणेज ऊगा राठोड़ ने बचाय दियो। वां पै व्हीया हमला में जो चतराई सूं ऊगै खून खराबो करया बिना ही मामला ने सम्हाळ, मामा ने बचाय दीधो. वा चतराई पै मामा मुगध व्हे, ऊगा ने आपरै कनै गिरनार में राख लीयो।

गिरनार रो ऊंचो पहाड़, वीं पै ऊंचो गढ जींरा ऊंचा गोखड़ा में ऊभा मामा भाणेज वन री सोभा देख रिया। तरु भ्रमर पाछ कटा कटा गाळरा, झर झर झरता झरणा, नाचता मोरिया, उछळता हिरण, जाणै देखवा री करे। यांरा सरीर रै पानी लगी पाटली मरदी सूं म्हांरै पढी ने सिलगी, धपरा पै नमी न मैनाग छोरगी।

नीचे पग री हवेली में लाती मजाजो पड़ो, रमो मनान देवता रो

थू कहतो तिण वार, ताळागढ वाळा धणी,
ताळी हमें बजाव, एकण हाथे ऊगड़ा ॥

"मंगळ ऊगा ने कीजे केवाट कठपींजरा में पड़्यो है। माथा ऊपरै गेलो वैय ग्यो है। छाती ऊपर सेलड़ा लाग रिया है। ऊगा, थू केवतो, एक हाथ सूं ताळी बजावूं जो अबै वगत पड़ी है, बजाव।"

मंगळ जो आंख्यां देखी सारी हगीगत ऊगा ने आय सुणाई।

ऊगो, गवाळा में आयो। मूंडागे थाळी पड़ी जीरे आगळी नीं अड़ाई। वठी ऊपर यूं रो यूं बैठ्यो, आधी रात व्हेगी पण ढोल्या पै पग नीं दीधो। अतरा ऊंडा सोच में पड़्यो के वीने खबर ही नीं के दो घड़ी सूं गेहलोतणी बैठी वीरा पग दाब री है। वठीने वो झांक्यो ही नीं। पग दबाय लीधा, ध्यान खेंचवा ने मोकळो खाल लीधो, दीवा री बाती ऊंची नीची कर अंधारो उजाळो कर थाकी पण ऊगो ऊंची आंख कर वठी ने ही नीं झांक्यो। हैरान व्हे गहलोतणी बोली,

"काँई सोच में पड़ग्या हो?"

"थाँ सोच में पड़ग्या हो! सुण्यो कोय नीं काँई? कोई खबर नी है अबै?" ऊगो चिमक्यो।

"आप सोच मत करो" गहलोतणी बोली, "म्हू बाजरगा में पाळा में रयोड़ी हूं म्हारी माखी रे पटै, म्हू जाणूं पटा री सारी हगीगत।"

"हाँ हाँ" ऊगारी आंख्यां चमक गी। "जाणो जणै तो पटा री सारी बात बता।"

राजा पूछयो, "कठै रैवो, अतरा दूरा क्यूं आया ?"

"माळवा रा रैण वाळा हां, आधी पाती देवा तो ही राज सैंचल घणी करै। वैठ वेगार घणी लै। धणी रै आगै सुणाई नीं। सुणी एक थांरै राज में रैत ने सुख है, जो था कनै आया हा।"

राजा कयो, "थां अठै वसो, आध में ही थारै रैआयत करालां। आछा खेत टाळनै थाने देवालां।"

अतराक में एक कन्सो, घोड़ा रा मूण्डागै पड्या चारा री पूळी उठाय, पटेल ने देखायतो बोल्यो, "पटेला ! देखो, राजा रा घोड़ा अन्यो चारो खावै।"

पटेल बोल्यो, "माराज म्हारै कनै धोव फोरट है, या देखो।" दस दस पूळा काढ राजा रे आगै राख्या, भाई भतीजा सारा ही फोरन लगाई।

"अन्नी धोव फोरट आपणा घोड़ा रे खावै जदी है।"

"म्हानै आवा दो, आग ही मीं'ना थारा घोड़ा ने अन्नी धोव नू खवाय दांला।"

"अन्नी धोव फोरट थां म्हाके घोड़ा तांई देवता रैवोला तो आध में ही रैई थांने रैयायत दांला।"

"म्हारै सारै धोव फोरट लागां तां जो भला घोड़ा ने राखलो।"

राजा राजी व्है न्हूं री पाग वधार, पटेल ने सीख दीधी।

भगाय दीधा । ले छैतरया ने चरवा लागगी ।

रुखाळा भाग्या भाग्या राजाजी कनैं पुकारू गिया के एक डाढाळो सूर थोड़ घाल्यां बैठयो है । आगै देखै तो राजाजी तो रावळा में पधारया थका । घोड़ा ने तो दूरया बांध दीधा, सिरदारां ने घरै जावा री सीख देय दीधी अर आप रावळा में दो मीना तारूं दाखल व्हेग्या । हुकम देय राख्यो कोई खास काम व्हे तो मायने अरज कराय दीजो । रुखाळा पुकारू गिया तो चोकी रा सिरदार कयो, "मायने राजाजी ने अतरीक बात री काई अरज करावा कोई गनीम चढनै तो आयो नीं है । आयो तो सूर है, चालो सिकार आई ।"

मे'लां रा मारा ही सिरदार भाला ले जाड़या बांध घोड़ा चढया । जाय थोड़ ने घेरी । घोड़ां री पगरव सुणनै भूंडण झांकी तो थोड़ ने तो घेर रागी ।

सूरो सूतो झाड में, भूंडण पैरा देय ।
जाग निकालु मायड़ा, कटक हिलोळा लेय ।।

चहूंणा रा फेर वळिया, गोळियां छूटवा लागी, भूंडण गैंन में आप हारै निपळी । घोड़ां रे गानी व्ही । भालां रा वार वेवा लाग्या, गोळ्यां री नीट गाजवा लागी । भूंडण तो सोनाग फरनी त्पटी सो घोड़ां ने दंत सूं उगाडनी, नरां ने धूळ भेळा करती झटीने वटीने निकळगी ।

भूंडण देखणां ने छाती रे नगार बैठगी । घोड़ा रा मूंडा फेरा लिया, चढनै सारा लगा नगार जावती पागड़ां गभाळवा, पीसा मटा रीसो

लालजी पेमजी

भाटीपा में जैसलमेर कानी एक लालजी भाटी रैवै । वे चोरी री कळा में घणां हुंस्यार । आपरी जवानी रा दिनां में वां घणी हाथ री चतराई कीधी । अबै बूढा व्हेग्या पण मन में उछाह घणो, काम पड़ै तो अबै ई पांचलो कोस री मुसाफरी कर आपरी कळा ने बतावा ने त्यार । लालजी ने एक सोच घणो, आपरी दाऊ रा डोकरा साथै बैठ्या, निसासा भर कैवो करै,

"आजकाल रा छोरां में कांई तन्त नी । कोई हुंस्यारी नीं, फुरती नीं, चतराई नी । कोई ई कळा ने सीखवा री हूंस ही नी राखै । सिखावां तो कीने सिखावां ! म्हारे बेटो व्हे तो दुनिया देखती अस्यो सिखातो ।

घरवाळी डोकरी समझावै "पार रे दुख ये दूख्या क्यूं ? आखी ऊमर घणा ही धंधा कीया, अबै तो रामजी रामजी करो ।"

पण लालजी तो ईं दुख में ही घुल्या जावै के या विद्या तो लुपत व्हेती जाय री है । म्हारी विद्या कोई सुपातर मिलै तो कीने सिखावूं पण या पाछला छोरां में तो कोई अस्या वाळो दीखै ही नीं । अटीने वटीने नजर फेरता रैवै । वाद वान में पेमजी नेरवाना रै नाम रो भणकारो पड़्यो । सुणी, पेमजी जवान छोरो है, हुंस्यार है अर पाच सात दमां ख्याळी मनखां रा हाथ बताया है । डोकरा रो जीव थोड़ो ठाडो पड़्यो

"बासदी लागी, बासदी लागी" गाव रा मिनख भेळा व्हे बुझाई । पेमजी री बहू तो बळग्या । पेमजी घणा रोया, बिलख्या । किरिया करम सारो करयो ।

मास छः बीत्या । पेमजी दूजा ब्याव री सोची, आछी लछमी देखण ने नीसरया ।

भाटीपा कानी गिया । लालजी जाण्यां, वाने आपरे घरे बुलाया, ठैराया, बहू मरगी, समाचार पूछ्या । पेमजी रोय रोय, बासदी में बळ मर जावा री हकीगत सुणाई ।

लालजी ने हसी आयगी, बोल्या, "थाने कहयो हो पेमजी, रमझोळ ले लो सिरकावोला । था ही बात व्ही ? लो संभाळो थारी लुगाई ने । या परणेता थारा हो, या म्हारी बेटी है, लो परणो ।"

पेमजी ने वारी लुगाई रूपां अर घणो ही गैणो गांठो दे बेटी ज्यूं विदा कीवी ।

—:—